# UGC NET - HISTORY
## SAMPLE THEORY
## PAPER - II

- प्राचीन भारतीय इतिहास

VPM CLASSES
For IIT-JAM, JNU, GATE, NET, NIMCET and Other Entrance Exams
1-C-8, Sheela Chowdhary Road, Talwandi, Kota (Raj.) Tel No. 0744-2429714
Web Site www.vpmclasses.com E-mail-vpmclasses@yahoo.com

**प्राचीन भारतीय इतिहास**

- प्राचीन भारत के अधिकतर अभिलेख पाषाण शिलाओं, स्तम्भों, ताम्रपत्रों, दीवारों तथा प्रतिमाओं पर उत्कीर्ण हैं।
- सर्वाधिक प्राचीन अभिलेख मध्य एशिया के बोगजकोई नामक स्थान से लगभग 1400 ई. पू. का प्राप्त हुआ है ; इस अभिलेख में इन्द्र, मित्र, वरूण और नासत्य आदि वैदिक देवताओं के नाम मिलतें है।
- भारत में सबसे प्राचीन अभिलेख अशोक के हैं इनका समय तीसरी शताब्दी ई. पू. है।
- मास्की, गुज्जर्रा, निठूर एवं उदगोलम से प्राप्त अभिलेखों में अशोक के नाम का स्पष्ट उल्लेख हैं। इन अभिलेखों से अशोक के धर्म व राजस्व के आदर्श पर प्रकाश पड़ता है।
- अशोक के अधिकतर अभिलेख ब्राह्मी लिपि में हैं, केवल उत्तर–पश्चिमी भारत के कुछ अभिलेख खरोष्ठी लिपि में हैं।
- लघुमान एवं शरेकुना से प्राप्त अशोक के अभिलेख यूनानी तथा आरमेइक लिपियों में है।
- प्रारम्भिक अभिलेख (गुप्त काल से पूर्व ) प्राकृत भाषा में हैं परन्तु गुप्त तथा गुप्तोत्तर काल के अधिकतर अभिलेख संस्कृत में है।
- यवन राजदूत हेलियोडोरस का बेसनगर (विदिशा) से प्राप्त गरूड़ स्तम्भ लेख में द्वितीय शताब्दी ई. पू में भारत में भागवत धर्म के विकसित होने से साक्ष्य प्राप्त हुए हैं।
- मध्य प्रदेश के एरण से वाराह प्रतिमा पर हूणराज तोरमाण के लेखों का विवरण है।
- सर्वाधिक अभिलेख मैसूर में प्राप्त हुए हैं।
- पर्सिपोलिस और बेहिस्तून अभिलेखों से ज्ञात होता है कि ईरानी सम्राट दारा (दारयवहु) ने सिन्धु घाटी को अधिकृत कर लिया था।
- दारा (दारयवहु) से प्रभावित होकर अशोक ने अभिलेख प्रचलित किए थे।
- सर्वप्रथम 1837 ई. में जेम्स प्रिंसेप ने ब्राह्मी लिपि में लिखित अशोक के अभिलेखों को पढ़ा था।
- सिक्कों के अध्ययन को मुद्राशास्त्र कहतें हैं।
- पुराने सिक्के तांबा, चांदी, सोना और सीसा धातु के बनते थे।
- पकाई मिट्टी के बने सिक्कों के सांचे ईसा की आरम्भिक तीन सदियों के हैं इनमें से अधिकांश सांचे कुषाण काल के है।

- भरहुत, बोधगया और अमरावती की मूर्तिकला में जनसामान्य के जीवन की दशा ज्ञात होती है।
- हड़प्पा, मोहनजोदड़ो से प्राप्त मुहरों से तत्कालीन धार्मिक स्थिति ज्ञात होती है।

**ब्राह्मण साहित्य**

- ब्राह्मण साहित्य में सर्वाधिक प्राचीन ग्रन्थ ऋग्वेद है। ऋग्वेद के द्वारा प्राचीन आर्यों के धार्मिक, सामाजिक, आर्थिक तथा राजनीतिक जीवन का परिचय मिलता है।
- वेदों की संख्या चार है– ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद।
- चारों वेदों का सम्मिलित रूप संहिता कहलाता है।
- ऋग्वेद के दो ब्राह्मण ग्रन्थ हैं– ऐतरेय एवं कौषीतकी (शांखायन)।
- यजुर्वेद के दो भाग हैं– शुक्ल यजुर्वेद एवं कृष्ण यजुर्वेद।
- यजुर्वेद के दो ब्राह्मण ग्रन्थ हैं–शतपथ एवं तैत्तिरीय।
- सामवेद का ब्राह्मण ग्रन्थ 'पंचविंश' है।

**ब्राह्मणेतर साहित्य**

- त्रिपिटक तीन हैं– सुत्त पिटक, विनय पिटक, अभिधम्म पिटक।
- सुत्त पिटक में बुद्ध के धार्मिक विचारों और वचनों का संग्रह हैं इसे बौद्ध धर्म का 'इनसाइक्लोपीडिया' कहा जाता है।
- जातकों की संख्या 550 हैं।
- बुद्ध घोष कृत 'विशुद्ध मग्ग' बौद्ध धर्म की 'हीनयान' शाखा का ग्रन्थ है। यह बौद्ध सिद्धान्तों पर प्रामाणिक दार्शनिक ग्रन्थ स्वीकार किया जाता है।
- जातक कथाएं ईसा पूर्व पांचवीं सदी से दूसरी सदी तक की सामाजिक व आर्थिक स्थिति की जानकारी का अमूल्य स्त्रोत हैं।
- दीपवंश एवं महावंश की रचना क्रमशः चौथी व पांचवीं शताब्दी में हुई थी। इन पालि ग्रन्थों में मौर्यकालीन इतिहास की विस्तृत जानकारी मिलती है।
- पालि भाषा का ग्रन्थ 'मिलिन्दपन्हो' (नागसेन द्वारा रचित) यूनानी राजा मिनाण्डर व बौद्ध भिक्षु नागसेन के दार्शनिक वार्तालाप से सम्बद्ध है।

**लौकिक साहित्य**

- लौकिक साहित्य के अन्तर्गत प्रमुख ऐतिहासिक स्त्रोत कौटिल्य कृत 'अर्थशास्त्र' है। यह भारत का प्रथम राजनीतिक ग्रथं है। यह मौर्यकालीन इतिहास एवं राजनीति की जानकारी का प्रमुख स्त्रोत हैं।
- विशाखादत्त कृत 'मुद्राराक्षस', सोमदेव कृत 'कथा सरित्सागर', क्षेमेन्द्र कृत 'वृहत्कथामंजरी' मौर्यकालीन घटनाओं की जानकारी के महत्वपूर्ण स्त्रोंत स्वीकार किए जाते हैं।
- पतंजलि का महाभाष्य तथा कालिदास कृत मालविकाग्निमित्रम् शुंगकाल के इतिहास जानने के स्त्रोत हैं।
- शुद्रक का 'मृच्छकटिकम्' तत्कालीन समाज का चित्रण है।
- कल्हण कृत 'राजतरंगिणी' में ऐतिहासिक घटनाओं को क्रमबद्ध ढंग से प्रस्तुत किया गया है।
- राजशेखर कृत 'प्रबन्धकोश' हमें गुजरात के चालुक्यों के इतिहास की जानकारी प्रदान करता है।
- 'गार्गी संहिता' से भारत पर हुए यवन आक्रमण की जानकारी मिलती है।

**विदेशी वृतान्त**

- हेरोडोटस (इतिहास का जनक) कृत 'हिस्टोरिका' में भारत और फारस के सम्बन्धों पर प्रकाश पड़ता है।
- मेगस्थनीज कृत 'इंडिका' में मौर्य युगीन समाज एवं संस्कृति की जानकारी प्राप्त होती है।
- टालमी की रचना 'ज्योग्राफी' से तत्कालीन भारत की विस्तृत जानकारी मिलती है।
- 'पेरिप्लस ऑफ द एरिथ्रियन सी' में भारतीय, बन्दगाहों एवं व्यापारिक वस्तुओं का उल्लेख है। 'प्लिनी' कृत 'नेचुरल हिस्टोरिका' से भारतीय पशुओं, पौधों, खनिज पदार्थों की जानकारी मिलती है। इसमें भारत व इटली के मध्य होने वाले व्यापार पर भी प्रकाश पड़ता है।
- फाह्यान के यात्रा विवरण से गुप्तकालीन भारत की सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक स्थिति ज्ञात होती है।
- ह्वेनसांग के यात्रा विवरण (सी–यू–की) में तत्कालीन 138 देशों का विवरण है, यह हर्षकालीन भारत की जानकारी का प्रमुख स्त्रोत है।
- इत्सिंग का यात्रा विवरण सातवीं शताब्दी के भारत का कच्चा चिट्ठा है।
- मात्वान लिन का विवरण हर्ष के पूर्वी अभियान का महत्वपूर्ण स्त्रोत है।

## प्रागैतिहासिक एवं आद्य इतिहास

### पुरापाषाण काल तथा मध्य पाषाण काल

### परिचय

- अतीत काल की घटानाओं की स्थिति की जानकारी देने वाले शास्त्र को ही हम 'इतिहास' कहतें हैं।
- प्राचीन भारतीय इतिहास की विशद सामग्री को सार्वजनीन एवं समझने योग्य बनाने के लिए इतिहासकारों ने इसे तीन भागों में बांटा है–

(1) प्रागैतिहासिक काल (2) आद्य–ऐतिहासिक काल (3) ऐतिहासिक काल

### प्रागैतिहासिक काल

- (प्राक् +इतिहास) अर्थात इस काल का इतिहास पूर्णतः पुरातात्विक साधनों पर निर्भर है इस काल का कोई लिखित साधन उपलब्ध नहीं हैं, क्योंकि मानव का जीवन अपेक्षाकृत असभ्य एवं बर्बर था।
- मानव सभ्यता के इस प्रारम्भिक काल को सुविधानुसार तीन भागों में बांटा गया है–

(1) पुरा पाषाण काल (2) मध्यपाषाण काल (3) नव पाषाण काल या उत्तर पाषाण काल

### (1) पुरा पाषाण काल

- हैण्ड–ऐक्स, क्लीवर और स्क्रैपर आदि विशिष्ट उपकरणों पर आधारित पुरापाषाण कालीन संस्कृति के अवशेष सोहन नदी घाटी, बेलन नदी घाटी तथा नर्मदा नदी घाटी एवं भोपाल के पास भीमबेटका नामक चित्रित शैलाश्रयों से प्राप्त हुआ है।

### (2) मध्य पाषाण काल

- मध्य पाषाण काल में प्रयुक्त होने वाले उपकरण बहुत छोटे होते थे इसलिए इन्हें 'माइक्रोलिथ' कहते है।
- मध्य प्रदेश में आदमगढ़ और राजस्थान में बागोर पशुपालन का प्राचीनतम् साक्ष्य इस काल में प्रस्तुत करतें है।
- इस काल में मानव के अस्थिपंजर (शारीरिक प्रारूपों ) का सबसे पहला अवशेष प्रतापगढ़ (उ. प्र.) के सराय नाहर तथा महदहा नामक स्थान से प्राप्त हुआ है।



VPM CLASSES

### (3) नव पाषाण काल

- नव पाषाण युग के प्रथम प्रस्तर उपकरण उ. प्र. के टोंस नदी घाटी में सर्वप्रथम 1860 में लेन्मेसुरियर ने प्राप्त किया।
- नव पाषाण युगीन प्राचीनतम बस्ती पाकिस्तान में स्थित बलूचिस्तान प्रान्त में मेहरगढ़ में है। मेहरगढ़ में कृषि के प्राचीनतम् साक्ष्य मिले हैं।
- नव पाषाण कालीन स्थल–बुर्जहोम एवं गुफकराल ( जो कश्मीर प्रान्त में स्थित हैं) से अनेक गर्तावास (गड्ढाघर) अनेक प्रकार के मृदभाण्ड एवं प्रस्तर तथा हड्डी के अनेक औजार प्राप्त हुए है।
- बुर्जहोम से प्राप्त कब्रों में पालतू कुत्तों को मालिक के साथ दफनाया जाता था। यह प्रथा भारत के किसी भी नव पाषाण कालीन स्थल से नहीं प्राप्त होती है।

### आद्य–ऐतिहासिक काल

- यह काल साहित्यिक एवं पुरातात्विक दोनों प्रकार के साधनों पर निर्भर है। हड़प्पा की संस्कृति तथा वैदिक संस्कृति की गणना आद्य इतिहास में की जाती हैं। परन्तु आद्य ऐतिहासिक काल की लिपियों को पढ़ने में सफलता नहीं मिली है।
- गैरिक एवं कृष्ण लोहित मृद्भाण्ड संस्कृति इस काल से सम्बन्धित हैं।

### ऐतिहासिक काल

- इस काल को इतिहासकार उस काल की संज्ञा देते हैं जिसके लिए लिखित साधन उपलब्ध हैं और जिसमें मानव सभ्य बन गया था। यह काल पुरातात्विक, साहित्यिक तथा विदेशियों के वर्णन पर निर्भर है।

### स्मरणीय तथ्य

**भीमबेटका –** भोपाल के समीप स्थित इस पुरा पाषाण कालीन स्थल से अनेक चित्रित गुफाएं, शैलाश्रय (चट्टानों से बने शरण स्थल) तथा अनेक प्रागैतिहासिक कलाकृतियाँ प्राप्त हुई हैं।

| | |
|---|---|
| **आमदमढ़ एवं बागोर–** | म. प्र. के आदमगढ़ एवं राजस्थान के बागोर नामक मध्य पाषणिक पुरास्थल से पशुपालन के प्राचीनतम् साक्ष्य मिलें हैं। जिनका समय लगभग 5000 ई. पू. हो सकता है। |
| **बुर्जहोम एवं गुफ्फाकराल –** | कश्मीरी नवपाषाणिक पुरास्थल से गर्तावास (गड्ढा घर) कृषि तथा पशुपालन के साक्ष्य मिलें है। |
| **चिराँद–** | (बिहार प्रान्त) एक मात्र नव पाषाणिक पुरास्थल जहाँ से प्रचुर मात्रा में हड्डी के उपकरण प्राप्त हुए हैं। |
| **पिकलीहल–** | कर्नाटक स्थित इस नव पाषाणिक पुरास्थल से शंख के ढेर और निवास स्थान दोनों पाये गये हैं। |
| **मेहरगढ़–** | बलूचिस्तान स्थित इस नव पाषाणिक पुरास्थल से कृषि के प्राचीनतम् साक्ष्य एवं नव पाषाणिक प्राचीनतम बस्ती एवं कच्चे घरों के साक्ष्य मिले है। |

- पुरापाषाण काल के मनुष्य मुख्यतः नेग्रिटो जाति के थे।
- मध्य पाषाण कालीन मिली समाधियों में मानव अस्थि पंजर के साथ–साथ कुत्ते के भी अस्थि पंजर मिले है।

प्राचीन इतिहास जानने के निम्नलिखित तीन महत्वपूर्ण स्त्रोंत है–

(1) पुरातात्विक स्त्रोत (2) साहित्यिक स्त्रोत (3) विदेशी यात्रियों के विवरण

**पुरातात्विक स्त्रोंत**

- प्राचीन भारत के अध्ययन के लिए पुरातात्विक सामग्रियाँ सर्वाधिक प्रमाणिक है। इसके अन्तर्गत मुख्यतः अभिलेख, सिक्के, स्मारक, भवन, मूर्तियाँ, चित्रकला आदि आते है।

**अभिलेख**

- पुरातात्विक स्त्रोंतों के अन्तर्गत सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्त्रोत अभिलेख हैं। प्राचीन भारत के अधिकतर अभिलेख पाषाण शिलाओं, स्तम्भों, ताम्रपत्रों, दीवारों तथा प्रतिमाओं पर उत्कीर्ण हैं।

- सर्वाधिक प्राचीन अभिलेख मध्य एशिया के बोगजकोई नामक स्थान से लगभग 1400 ई. पू. में मिले हैं। इस अभिलेख में इन्द्र, मित्र, वरूण और नासत्य आदि वैदिक देवताओं मे नाम मिलते हैं।
- भारत में सबसे प्राचीन अभिलेख अशोक के है जो 300 ई. पू. के लगभग है।
- मास्की, गुज्जर्रा, निठूर एवं उदगोलम से प्राप्त अभिलेखों में अशोक के नाम का स्पष्ट उल्लेख है। इन अभिलेखों से अशोक के धर्म और राजस्व के आदर्श पर पर्याप्त प्रकाश पड़ता है।
- अशोक के अधिकतर अभिलेख ब्राह्मी लिपि में है। केवल उत्तर पश्चिमी भारत के कुछ अभिलेख खरोष्ठी लिपि में है। खरोष्ठी लिपि फारसी लिपि की भांति दाईं से बाई की ओर लिखी जाती है।
- लघमान एवं शरेकुना से प्राप्त अशोक के अभिलेख यूनानी तथा आरमेइक लिपियों में हैं। इस प्रकार अशोक के अभिलेख मुख्यतः ब्राह्मी, खरोष्ठी, यूनानी तथा आरमेइक लिपियों में मिले है।

**सिक्के**

- सिक्के के अध्ययन को मुद्राशास्त्र कहते है। पुराने सिक्के ताँबा, चाँदी, सोना और सीसा धातु के बनते थे।
- पकाई मिट्टी के बने सिक्कों के साँचे ईसा की आरम्भिक तीन सदियों के हैं। इनमें से अधिकांश साँचे कुषाण काल के है।
- आहत मुद्राओं की सबसे पुरानी निधियाँ (होर्ड्स) पूर्वी उत्तर प्रदेश और मगध में मिली है।
- आरम्भिक सिक्के अधिकतर चाँदी के होते है जबकि ताँबें के सिक्के बहुत कम थे। ये सिक्के पंचमार्क सिक्के कहलाते थे। इन सिक्कों पर पेड़, मछली, साँड, हाथी, अर्द्धचन्द्र आदि आकृतियाँ बनी होती थी। आहत सिक्कों पर बने निशान इस प्रकार थे–

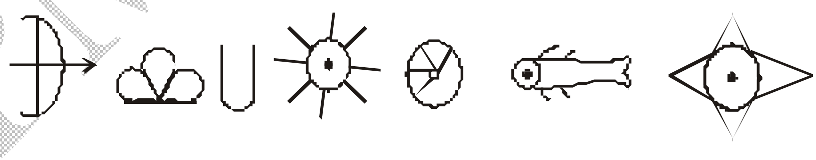

- सर्वाधिक सिक्के मौर्योत्तर काल में मिले हैं जो विशेषतः सीसे, चाँदी, ताँबा एवं सोने के है। सातवाहनों मे गुप्त शासकों ने सोने के सर्वाधिक सिक्के जारी किये।
- सर्वप्रथम लेख वाले स्वर्ण सिक्के हिन्द–यूनानी (इण्डो–ग्रीक) शासकों ने चलाए।

**मूर्तियाँ**

VPM CLASSES

- प्राचीन काल में मूर्तियों का निर्माण कुषाण काल से आरम्भ होता है। कुषाण, गुप्त तथा गुप्तोत्तर काल में निर्मित मूर्तियों के विकास में जन सामान्य की धार्मिक भावनाओं का विशेष योगदान रहा है।

| अभिलेख | शासक | विषय |
| --- | --- | --- |
| • हाथी गुम्फा अभिलेख | कलिंग राज खारवेल | खारवेल के शासन काल की घटनाओं का क्रमबद्ध विवरण (तिथि रहित अभि.) मिलता है। |
| • जुनागढ़ (गिरनार) | रूद्रदामन | रूद्रदामन की विजयों, व्यक्तित्व एवं कृतित्व का विवरण अभिलेख प्राप्त होता है। |
| • नासिक अभिलेख | गौतमी बल श्री | गौतमी पुत्र सातकर्णी के सैनिक सफलताओं तथा (सातवाहन) अन्य कार्यों का विवरण मिलता है। |
| • प्रयाग स्तम्भ लेख | समुद्रगुप्त | समुद्रगुप्त की विजयों और नीतियों का पूरा विवेचन मिलता है। |
| • मन्दसौर अभिलेख | मालवा नरेश यशोधर्मन | यशोधर्मन की सैनिक उपलब्धियों का वर्णन मिलता है। |
| • ऐहोल अभिलेख | पुलकेशिन द्वितीय | हर्ष–पुलकेशिन II के युद्ध का विवरण मिलता है। |
| • ग्वालियर अभिलेख | प्रतिहार नरेश भोज | गुर्जर–प्रतिहार शासकों के विषय में विस्तृत जानकारी मिलती है। |
| • भितरी तथा जूनागढ़ | स्कन्दगुप्त | स्कन्दगुप्त के जीवन की अनेक महत्वपूर्ण घटनाओं का अभिलेख विवरण मिलता है। |
| • देवपाड़ा अभिलेख | बंगाल शासक विजयसेन | विजयसेन के शासन की महत्वपूर्ण घटनाओ का वर्णन किया गया है। |

मध्यपाषाण काल एवं नवपाषाण काल

- नवपाषाण काल में मानव ने सबसे पहली बार कृषि करना सीखा।

- कृषि–कर्म ने अनाज के संग्रह, भोजन की पद्धति हेतु मृदभाण्डों का निर्माण प्रारम्भ किया।
- कृषि–कर्म की आवश्यकताओं के अनुरूप प्रस्तर उपकरण अधिक धारधार व सुघड़ बनने लगें। उन पर पालिश भी की जाने लगी।
- अनाज उत्पादन से जीवन में स्थायित्व की प्रवृति उत्पन्न हुई तथा ग्राम–संस्कृति की स्थापना हुई।
- भारत में नवपाषाण युगीन सभ्यता के तीन प्रमुख क्षेत्र रहे–

  (i) उत्तर–पश्चिम क्षेत्र (लगभग 6000 ई. पू.)

  (ii) उत्तर–पूर्वी क्षेत्र (लगभग 5000 ई. पू.)

  (iii) दक्षिणी क्षेत्र (लगभग 2500 ई. पू.)
- उत्तर–पश्चिम क्षेत्र में नवपाषाणयुगीन सभ्यता की प्रमुख विशेषता गेहूं और जौ का उत्पादन, कच्ची ईंटों के आयताकार मकान, बड़े पैमाने पर पशुपालन आदि है।
- उत्तर–पश्चिम क्षेत्र में 5000 ई. पू. के बाद से मृद्‌भाण्ड़ों के अवशेष प्रप्त हुए हैं जो भारत में उपलब्ध प्राचीनतम है।
- मेहरगढ़ प्राचीनतम कृषक बस्ती है।
- कश्मीर घाटी में बुर्जहोम, गुफाकराल नवपाषाण युग के प्रमुख केन्द्र थे।
- बिहार में चिरांद नामक स्थान नवपाषाण युग का प्रमुख स्थल था। यहां हिरणों के सींगों से बने उपकरण बहुतायात से मिले हैं। यहां से टेराकोटा की मानव मूर्तिकाएं प्राप्त हुई हैं।
- असम व मेघालय में नव पाषाणयुगीन महत्त्वपूर्ण स्थल प्राप्त हुए हैं। इस क्षेत्र से प्राप्त मृद्‌भांड विशिष्ट हैं जिन पर रस्सी से चिह्नित किया गया है और मोती चिपकाए गए हैं।
- दक्कन में चन्दोली, नेवासा, दैमाबाद, ऐरण जोखा आदि नवपाषाणयुगीन स्थल रहे थे। यद्यपि यहां के मानव धातुयुग में प्रवेश कर गए थे।
- दक्षिण भारत में नागार्जुनकोण्ड, मस्की, पिक्कीहल, ब्रह्मगिरि, हल्लुर आदि प्रमुख नवपाषाण काल की बस्तियां थी।

**ताम्रपाषाण संस्कृतियां (ताम्र–पाषणिक काल)**

- सिन्धु घाटी की सभ्यता के अपकर्ष काल में भारत के कुछ भागों में तांबे के सीमित प्रयोग से कुछ कृषक बस्तियां विकसित हो रही थी; यद्यपि इन बस्तियों के लोगों के अधिकांश उपकरण प्रस्तर के ही थे, इसलिए इन्हें ताम्र–पाषाणिक बस्तियां कहा गया है।
- ताम्र–पाषाणिक बस्तियों में स्थानीय प्रवृत्तियों का प्राबल्य रहा, इसलिए इन्हें सिन्धु–सभ्यता नाम न देकर पृथक्–पृथक् क्षेत्रों की संस्कृतियों को उनके स्थल नामों से जाना गया है।
- सर्वप्रथम तांबा धातु को औजारों में प्रयुक्त किया गया था मनुष्य ने पत्थर एवं तांबे के औजारों का साथ–साथ प्रयोग किया इसलिए यह काल ताम्र–पाषणिक काल के नाम से जाना गया।
- ताम्र पाषाण काल के लोग प्रमुखतः ग्रामीण समुदाय के थे।
- भारत में ताम्र–पाषाण काल के मुख्य क्षेत्र दक्षिण–पूर्वी राजस्थान (अहार एवं गिलुंड), पश्चिमी मध्य प्रदेश (मालवा, कयथा एवं एरण)।
- पश्चिमी महाराष्ट्र में अहमदनगर के जोर्वे, नेवासा, दैमाबाद, चन्दौली, सोनगांव, इनामगांव से सभी स्थल जोखे संस्कृति के हैं।
- ताम्र–पाषाण काल में मनुष्य गेहूँ, धान व दाल की कृषि करने में प्रवीण हो गया था।
- अहार के लोग पत्थर निर्मित गृहों में रहते थे।
- दैमाबाद में कांसे की निर्मित वस्तुएं प्राप्त हुई है।
- ताम्र–पाषाण काल के लोग मातृ देवी की पूजा करते थे और वृषभ धार्मिक सम्प्रदाय का प्रतीक था।
- अनेक श्रृंखलाएं प्राप्त हुई है कुछ प्राक्–हड़प्पीय, कुछ हड़प्पा संस्कृति की समकालीन, कुछ हड़प्पोत्तर काल की है।
- जोर्वे संस्कृति ही 500 ई.पू. तक अस्तित्व में रही थी।
- ताम्र–पाषाणिक बस्तियों के लुप्त होने का प्रमुख कारण अत्यल्प वर्षा (अनावृष्टि) माना जाता है।
- सभी ताम्र–पाषाण समुदाय चाकों पर बने काले व लाल मृद्भाण्डों का प्रयोग सर्वप्रथम ताम्र–पाषाणिक लोगों ने ही किया था।
- ताम्र पाषाण स्थलों से हल, फावड़ा मिला है।

- सबसे बड़ी ताम्र निधि मध्य प्रदेश के गुगेरिया से प्राप्त हुई है, इसमें 424 तांबे के उपकरण तथा 102 चांदी के पत्तर मिले है।

**महत्वपूर्ण तथ्य**

- **मालवा** – उत्कृष्ट्तम् ताम्र पाषाण मृद्भाण्ड।
- **नवदाटोली (नर्मदा)**– इतने सारे अनाज अन्यत्र कहीं नहीं मिलते।
- **दैमाबाद (गोदावरी)** – सबसे बड़ी बस्ती, कलश शवाधान, दिशा, उत्तर–दक्षिण।
- **इनामगाँव** – किलाबन्द बस्ती, हाथी दाँत, शिल्पकार, चूना बनाने वाले, खिलौने बनाने वाले आदि।
- **महाराष्ट्र जोर्वे संस्कृति**– द्विस्तरीय निवास।
- **कोटदीजी, आमरी, कालीबंगा, गणेश्वर** – ने हड़प्पा के उदय की पृष्ठभूमि बनाई।
- **कालीबंगा एवं वनमाली**– प्राक् हड़प्पन अवस्था तथा ताम्र पाषाणिक बस्तियों के लुप्त होने का कारण अत्यल्प वर्षा (सूखा)।
- ताम्र पाषाण संस्कृति तत्वतः ग्रामीण पृष्ठभूमि पर खड़ी थी।

**सिन्धु (हड़प्पा) सभ्यता**

इस सभ्यता के लिए साधारणतः तीन नामों का प्रयोग होता है। 'सिन्धु सभ्यता', सिन्धु घाटी की सभ्यता' और हड़प्पा सभ्यता'। इनमें से प्रत्येक शब्द की एक पृष्ठभूमि है। प्रारम्भ में पश्चिमी पंजाब के हड़प्पा एवं तत्पश्चात मोहनजोदड़ों की खोज हुई तब यह सोचा गया कि यह सभ्यता अनिर्वायतः सिन्धु घाटी तक सीमित थी। अतः इसे सिन्धु घाटी की सभ्यता का नाम दिया गया। हड़प्पा या सिन्धु संस्कृति का उदय ताम्रपाषाणिक पृष्ठभूमि पर भारतीय उपमहाद्वीप के पश्चिमोत्तर भाग में हुआ। क्योंकि इसका पता सबसे पहले 1921 में पाकिस्तान के पश्चिमी पंजाब प्रान्त मे अवस्थित हड़प्पा के आधुनिक स्थल में चला। इस परिपक्व हड़प्पा संस्कृति का केन्द्र स्थल पंजाब और सिन्ध में मुख्यतः सिन्ध घाटी में पड़ता हैं।

| | स्थल | उत्खनन वर्ष | उत्खनन कर्त्ता | स्थल की स्थिति |
|---|---|---|---|---|
| 1. | हड़प्पा | 1921 | दयाराम साहनी | माण्टगोमरी जिला पंजाब (पाकिस्तान) |
| 2. | मोहनजोदड़ों | 1922 | आर. डी. बनर्जी | सिन्ध के लरकाना जिले (पाकिस्तान) |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 3. | सुत्कार्गेडोर | 1927 | आर. एल. स्टाइन | ब्लूचिस्तान (पाकिस्तान) |
| 4. | चन्हूदडो | 1931 | एम. जी. मजूमदार | सिन्ध (पाकिस्तान) |
| 5. | रंगपुर | 1953 | माधोस्वरूप वत्स | अहमदाबाद (काठियावाड़, भारत) |
| 6. | कोटदीजी | 1935 | धुर्ये | सिन्ध (पाकिस्तान) |
| 7. | रोपड़ | 1953 | वाई. डी. शर्मा | पंजाब (भारत) |
| 8. | कालीबंगा | 1953 | ए. घोष | गंगानगर (राजस्थान) |
| 9. | लोथल | 1955–63 | एस. आर. राव | अहमदाबाद (काठियावाड़) |
| 10. | आलमगीर | 1958 | यज्ञ दत्त शर्मा | मेरठ (उ. प्र.) |
| 11. | सुरकोतदा | 1972–75 | जगपति जोशी | कच्छ (गुजरात) |
| 12. | बनवली | 1973 | आर. एस. बिष्ट | हिसार (हरियाणा) |
| 13. | धौलावीरा | 1990–91 | आर. एस. बिष्ट | कच्छ का रन (गुजरात) |
| 14. | राखीगढ़ी | | रफीक मुगल | हरियाणा |
| 15. | दैमाबाद | 1974–79 | | अहमदनगर (महाराष्ट्र) |
| 16. | देसलपुर | 1963–63 | | कच्छ (गुजरात) |

- दजला–फरात और नील घाटी सभ्यताओं की समकालीन यह सभ्यता अपने विशिष्ट नगर नियोजन और जलनिकासी व्यवस्था के लिए प्रसिद्ध है
- सन् 1921 में भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग के महानिदेशक सर जान मार्शल के निर्देशन में राय बहादुर साहनी ने पंजाब (वर्तमान पाकिस्तान) के माण्टगोमरी जिले में रावी नदी के तट पर स्थित हड़प्पा का अन्वेषण किया।
- जान मार्शल ने सर्वप्रथम इसे सिन्धु सभ्यता का नाम दिया।
- इस सभ्यता के अब तक 350 से अधिक स्थल प्रकाश में आ चुके हैं। इसका अधिकांश स्थल (लगभग 200) गुजरात में है।

- विभाजन के पूर्व उत्खनित अधिकांश स्थल विभाजन के उपरान्त (1947) पाकिस्तान में चले गये। अपवाद स्वरूप दो स्थल कोटला निहंग खाँ (रोपड़) सतलज नदी पर तथा रंगपुर मादर नदी तट पर (काठियावाड़) भारतीय सीमा क्षेत्र में शेष बचे है।

**काल निर्धारण**

- सैन्धव सभ्यता की तिथि को निर्धारित करना भारतीय पुरातत्व का विवादग्रस्त विषय है। यह सभ्यता आरम्भ से ही विकसित रूप में दिखाई पड़ती है। तथा इसका पतन भी आकस्मिक प्रतीत होता हैं। ऐसी स्थिति में कुछ भी निश्चित तौर पर नहीं कहा जा सकता।
- इस क्षेत्र में सर्वप्रथम प्रयास जान मार्शल का रहा है। उन्होने 1931 में इस सभ्यता की तिथि लगभग 3250 ई. पू. से 2750 ई. निर्धारित की।
- रेडियों कार्बन–14 (सी–14) जैसी नवीन विश्लेषण पद्धति के द्वारा हड्प्पा सभ्यता की तिथि 2500 ई. पू. से 1750 ई. पू. माना गयी है। जो सर्वाधिक मान्य है।
- नवीनतम आंकड़ों के अनुसार यह सभ्यता 400–500 वर्षों तक विद्यमान रही तथा 2200 ई. पू. से 2000 ई. पू. के मध्य यह अपने परिपक्व अवस्था में थी।

| | विद्वान | निर्धारित तिथि |
|---|---|---|
| 1. | जान मार्शल | 3250 ई. पू. – 2750 ई. पू. |
| 2. | अर्नेस्ट मैके | 2800 ई. पू. – 2500 ई. पू. |
| 3. | माधो स्वरूप वत्स | 3500 ई. पू. – 2700 ई. पू. |
| 4. | सी. जे. गैड | 2350 ई. पू. – 1750 ई. पू. |
| 5. | मार्टीमर हवीलर | 2500 ई. पू. – 1500 ई. पू. |
| 6. | फेयर सर्विस | 2000 ई. पू. – 1500 ई. पू. |

**विस्तार**

- अब तक इस सभ्यता के अवशेष पाकिस्तान और भारत में पंजाब, सिन्ध, बलूचिस्तान, गुजरात, राजस्थान, हरियाणा, पश्चिमी उ. प्र. जम्मू कश्मीर, पश्चिमी महाराष्ट्र के भागों में पाये जा चुके है।

- इस सभ्यता का फैलाव उत्तर में लेकर दक्षिण में नर्मदा के मुहाने तक और पश्चिम में मकरान समुद्र तट से लेकर पश्चिमी उ. प्र. में मेरठ तक है।
- इस सभ्यता का सर्वाधिक पश्चिमी पुरास्थल सुत्कागेंडोर (ब्लुचिस्तान), पूर्वी पुरास्थल आलमगीर उत्तरी पुरास्थल माँडा (जम्मू) तथा दक्षिणी पुरास्थल दैमाबाद है।
- इस त्रिभुजाकार क्षेत्र का क्षेत्रफल वर्तमान में लगभग 13 लाख वर्ग कि.मी. है।
- इस सभ्यता के विस्तार के आधार पर ही स्टुअर्ट पिगट ने हड़प्पा एवं मोहन जोदड़ों को एक विस्तृत साम्राज्य की जुड़वा राजधानियाँ बताया है।

**सिन्धु सभ्यता के निर्माता**

- सिन्धु घाटी सभ्यता के प्रर्वतकों या मूल संस्थापकों के सम्बन्ध में हमारी उपलब्ध जानकारी केवल समकालीन खंडहरों से प्राप्त मानव कंकाल और कपाल (खोपड़ियाँ) है।
- प्राप्त साक्ष्यों से पता चलता है कि मोहनजोदड़ों की जनसंख्या एक मिश्रित प्रजाति की थी जिसमें कम से कम चार प्रजातियाँ थी।

1. प्रोटो–आस्ट्रेलाइड 2. भूमध्य सागरीय 3. अल्पाइन 4. मंगोलायड

- आमतौर पर यही धारणा है कि मोहनजोदड़ों के लोग मुख्यत': भूमध्यसागरीय प्रजाति के थे।
- किसी प्रजाति विशेष द्वारा सिन्धु सभ्यता के प्रवर्तन या संस्थापन करने के सम्बन्ध में इतिहास एवं पुरातत्वविदों के मध्य काफी मतभेद है।
- सिन्धु सभ्यता के प्रवर्तकों को द्रविड़, ब्राहुयी, सुमेरियन, पणि असुर, वृत्य, बाहीक, दास, नाग, आर्य प्रजातियों से सम्बन्धित बताया जाता है।
- परन्तु अधिकांश विद्वान इस मत से सहमत है कि द्रविड़ ही सैन्धव सभ्यता के निर्माता थे।

[redacted]

**मुख्य स्थल :**

- सिन्धु घाटी के जिन नगरों की खुदाई की गई है उन्हें निम्नलिखित वर्गो में वर्गीकृत किया जा सकता है –
  1. केन्द्रीय नगर
  2. तटीय नगर और पत्तन
  3. अन्य नगर एवं कस्बे
- **केन्द्रीय नगर** – सिन्धु सभ्यता के तीन केन्द्रीय नगर– हड़प्पा, मोहनजोदड़ो और धौलवीरा समकालीन बड़ी बस्तियाँ थी।

**हड़प्पा :**

- पाकिस्तान के पंजाब प्रान्त में स्थित माण्टगोमरी जिले में रावी नदी के बायें तट पर यह पुरास्थल स्थित है।
- हड़प्पा के टीले या ध्वंशावशेषों के विषय में सर्वप्रथम जानकारी 1826 में **चार्ल्स मेर्सन** ने दी।
- 1921 में दयाराम साहनी ने इसका सर्वेक्षण किया और 1923 से इसका नियमित उत्खनन आरम्भ हुआ। 1926 में माधोस्वरूप वत्स ने तथा 1946 में मार्टीमर ह्वीलर ने व्यापक स्तर पर उत्खनन कराया।
- हड़प्पा से प्राप्त दो टीलों को नगर टीला तथा पश्चिमी टीले को दुर्ग टीला के नाम से सम्बोधित किया गया है।
- यहाँ पर 6–6 की दो पंक्तियों में निर्मित कुल बारह कक्षो वाले एक अन्नागार का अवशेष प्राप्त है। जिसका कुल क्षेत्र 2,745 वर्ग मी. से अधिक है।
- हड़प्पा के समान्य आवास क्षेत्र के दक्षिण में एक ऐसा कब्रिस्तान स्थित है जिसे समाधि आर–37 नाम दिया गया है।
- हड़प्पा के किले के बाहर कुछ ऐसे भवन है जिनकी पहचान कर्मचारियों के आवास, दस्तकारी के मंच और 275 वर्ग मीटर में फैले अन्नागार से की गई है।
- सिन्धु सभ्यता में अभिलेख युक्त मुहरें सर्वाधिक हड़प्पा से मिले है।
- हड़प्पा में दो कमरों वाले बैरक भी है, जो शायद मजदूरों के रहने के लिए थे।

**मोहनजोदड़ो :**

- सिन्धी में इसका शाब्दिक अर्थ 'मृतकों का टीला' यह सिन्ध के लरकाना जिले में सिन्धु नदी तट पर स्थित है। इसकी सर्वप्रथम खोज राखालदास बनर्जी ने 1922 में की थी।
- मोहनजोदड़ो का शायद सबसे महत्वपूर्ण सार्वजनिक स्थल है। विशाल स्नानागार, जिसका जलाशय दुर्ग के टीले में है। यह 11.88 मीटर लम्बा, 7.01 मीटर चौड़ा और 2.43 मीटर गहरा है।
- यह विशाल स्नानागार धर्मानुष्ठान सम्बन्धी स्नान के लिए था। मार्शन ने इसे तत्कालीन विश्व का एक आश्चर्यजनक निर्माण कहा।
- **विशाल अन्नागार –** मोहनजोदड़ो की सबसे बड़ी इमारत है। जो 4.71 मी. लम्बा और 15.23 मी. चौड़ा है।
- मोहनजोदड़ो में नगरयोजना के अन्तर्गत उत्तर–दक्षिण एवं पूर्व–पश्चिम की ओर जाने वाली समानान्तर सड़कों का जाल बिछा था जिन्होंने नगर को लगभग समान आकार वाले खण्डों में विभाजित कर दिया था।
- मोहनजोदड़ो की शासन व्यवस्था राजतन्त्रात्मक न होकर जनन्त्रात्मक थी। जहाँ के लि की रक्षा प्रणाली हड़प्पा के किले के समान थी। इसमें एक सुनियोजित नगर के सभी तत्व दिखाई देते है।

**चन्हूदड़ो**

- मोहनजोदड़ो से 80 मील दक्षिण में स्थित इस स्थल की सर्वप्रथम खोज 1931 ई. एम. जी मजूमदार ने की थी। 1936 में इसका उत्खनन मैके ने किया।
- यहाँ सैन्धव संस्कृति के अतिरिक्त प्राक् हड़प्पा संस्कृति जिसे झूकर संस्कृति और झांगर संस्कृति कहते है, के अवशेष मिले हैं।
- यहाँ के निवासी कुशल कारीगर थे। इसकी पुष्टि इस बात से की जाती है कि यह मनके, सीप, अस्थि, तथा मुद्र बनाने का प्रमुख केन्द्र था।
- यहाँ से प्राप्त अवशेषों मे प्रमुख है– अलंकृत हाथी, खिलौना, एवं कुत्ते के बिल्ली का पीछा करते पद–चिन्ह, सौन्दर्य प्रसाधनों में प्रयुक्त लिपिस्टक आदि।

**लोथल**

- अहमदाबाद जिले (गुजरात) के सरागवाला ग्राम से 80 कि.मी. दक्षिण में भेगवा नदी के तट स्थित इस स्थल की सर्वप्रथम खोज डा. एस. आर. रा ने 1957 में की थी।
- सागर तट पर स्थित यह स्थल पश्चिमी एशिया से व्यापार का प्रमुख बन्दगाह था।
- लोथल से मिले एक मकान का दरवाजा गली की ओर न खुल कर सड़क की ओर खुलता था।
- उखननो से लोथल की जो नगर योजना और अन्य भौतिक वस्तुएं प्रकाश में आई है। उनसे लोथल एक 'लघु हड़प्पा' या 'मोहनजोदड़ो' नगर प्रतीत होता है।
- लोथल की सबसे प्रमुख उपलब्धि जहाजों की गोदी (डॉक–यार्ड)है। यह लोथल के पूर्वी खण्ड में पक्की ईटों का एक तालाब जैसा घेरा था।

**कालीबंगा**

- राजस्थान के गंगानगर जिले में स्थित इस प्राक् हड़प्पा पुरास्थल की खोज सर्वप्रथम ए. घोष ने 1853 में की।
- कालीबंगाा में प्राक् संन्धव संस्कृति की सबसे महत्वपूर्ण उपलब्धि एक जुते हुए खेत का साक्ष्य है।
- कालीबंगाा में किलेबन्द पश्चिमी टीले के दो पृथक–पृथक किन्तु परस्पर संबद्ध खण्ड है– एक सम्भवतः जनसंख्या के विशिष्ट वर्ग के निवास के लिए और दूसरा अनेक ऊंचे–ऊंचे चबूतरों के लिए जिसके शिखर पर हवन कुण्डो के अस्थित्व का साक्ष्य मिलता है। इस स्थल के पश्चिम में कब्रिस्तान है।
- कालीबंगा के पूर्वी टीले की योजना मोहनजोदड़ो की योजना से मिलती जुलती है। परन्तु इन दोनों मे अन्तर यह है कि कालीबंगा के घर कच्ची ईटों के बने थे इसके विपरीत मोहनजोदड़ो के घर अधिकांशतः पक्की ईंटो के थे।

**बनवाली**

- हरियाणा के हिसार के जिले में स्थित इस पुरास्थ की खोज आर.एस. विष्ट ने 1973 में की थी।
- यहाँ कालीबंगा की तरह दो सांस्कृतिक अवस्थाओं–अवस्थाओं–प्राक् हड़प्पा (हड़प्पा– पूर्व) तथा हड़प्पा काहलीन के दर्शन होते है।
- बनवाली में जल निकास प्रणाली, जो सिन्धु सभ्यता की सबसे महत्वपूर्ण विशषेता थी का अभाव है।

| **नगर** | **नदी** |
|---|---|
| | (सागर तट) |

| | |
|---|---|
| मोहनजोदड़ो | सिन्धु नदी |
| हडप्पा | रावी नदी |
| रोपड़ | सतलज नदी |
| माँड़ | चिनाब नदी |
| कालीबंगा | घग्गर नंदी (प्राचीन सरस्वती एवं दृश्द्वती) |
| लोथल | भोगवा नदी |
| सुत्कांगेडोर | दाश्क नदी |
| बालाकोट | विंदार नदी (अरब सागर) |
| सोत्काकोह | शादीकौर (अरब सागर) |
| आलमगीपुर | हिण्डन नदी |
| रंगपुर | मादर नदी |
| कोटदीजी | सिन्धु नदी |
| बनवाली | प्रचीन सरस्वती नदी |
| चन्हूदड़ो ` | सिन्धु नदी |

**सुरकोटदा**

- गुजरात के कच्छ जिले में स्थित इस स्थल की सर्वप्रथम खोज जगपति जोशी ने 1964 में की। यह स्थल सैन्धा संस्कृति के पतन काल को दृष्अिगत करता है।
- सुरकोटदा एक महत्वपूर्ण प्राचीर युक्त सिन्धु कालीन महत्वपूर्ण बस्ती है।
- इस स्थल के अंतिम स्तर पर घोड़े की अस्थियाँ मिली हैं जो किसी भी अन्य हड़प्पा कालीन स्थल से प्राप्त नहीं हुई हैं।
- यहाँ के अवशेषों में प्रमुख हैं–घोड़े की अस्थियाँ एवं एक विशेष प्रकार का कब्रगाह ।

**रंगपुर**

- यह स्थल अहमदाबाद जिले में स्थित है । क्रमानुसार इसकी खोज 1931 में एम.एस. वत्स तथा 1931 में एस.आर राव ने की।
- यहाँ सैन्धव संस्कृति के उत्तरावस्था के दर्शन होते हैं। उल्लेखनीय है कि यहाँ से प्राप्त अवशेषों मे न कोई मुद्रा और न ही मातृदेवी की मूर्ति प्राप्त हुई है।
- यहाँ धन की भूसी के ढेर, कच्ची इंटों के दुर्ग, नालियाँ, मृदभाण्ड, पतथर के फलक आदि मिले हैं।

**कोटदीजी**

- सिन्ध प्रान्त के खैरपुर स्थित की सर्वप्रथम खोज धुर्ये ने 1935 में की। 1955 से फजल अहमद खन ने इसकी निमित खुदाई कराई।
- यहाँ प्राक् हड़प्पा संस्कृति की अवस्था दृष्टिगोचर होती है जहाँ पत्थरों का इस्तेमाल होता है।
- सम्भवतः पाषाण युग मे सभ्यता का अंत तथा हड़प्पा सभ्यता का विकास यहाँ हुआ। यहाँ से प्राप्त मुख्य अवशेष हैं– वाणाग्र, कांस्य की चूड़ियाँ धातु के उपकरण तथा हथियार ।

**धौलावीरा**

- गुजरात के कच्छ जिले के भ्रचाऊ तालुक में स्थित धौलावीरा आज एक साधारण गाँव है। इसकी खोज (1990 –91) में आ.एस.विष्ट ने की।
- धौलावीरा वर्तमान भारत में खोजे गये हड़प्प कालीन दो विशालतम् नगरों में से एक है। इस श्रेणी में दूसरा विशालतम् नगर हरियाण में स्थित राखीगढ़ी है।
- धौलावीरा भारतीय उपमहाद्वीप का चौथ विशालतम हड़प्पाकालीन नगर है। इस आकार के तीन अन्य नगर हैं– मोहनजोदड़ो, हड़प्पा एवं बहावलपुर में गनेड़ीवाल (अब यह तीनों नगर पाकिस्तान में है)।

**अन्न नगर**

- मुंडीगाक नामक हड़प्पाकाली पुरास्थल अफगानिस्तान में सिथत है ।
- माँडा – पर पंजाल पर्वतमाला की तराई में चिनाव नदी के दांये तट पर (जम्मू) स्थित इस स्थल में की गई खुदाई से हड़प्पा और ऐतिहासिक युग से सम्बन्धित संस्कृति का त्रि–स्तरी क्रम प्राप्त हुआ है।
- प्रागैतिहासिक काल में मांडा एक एक छोटी हड़प्पाकालीन बस्ती थी। यहाँ से विशेष प्रको मृदभाण्ड, टेरीकोटा के आदि प्राप्त हुई है।

**क्षेत्र**      **स्थित पुरास्थल**

| | | | |
|---|---|---|---|
| 1. | अफगानिस्तान | – | मुंडी गाक, शोर्तुगुई |
| 2. | बलूचिस्तान (पाकिस्तान) | – | मेहरगढ़, सुत्कागेनडोर, सुत्काकोह, बालाकोट, रानाघुंड्ई, कुल्ली, क्वेटाघाटी, दबसादात एवं दबारकोट आदि |
| 3. | सिन्ध | – | कोटदीजी, आमरी, मोहनजोदड़ों, अलीमराद, चन्हूदडों, जुदीरोदडों झ आदि |
| 4. | पश्चिमी पंजाब (पाकिस्तान) | – | हड़प्पा, डेरा इस्माइल खाना रहमानढेरी, जलीलपुर आदि। |
| 5. | पंजाब (भारत) | – | रोपड़ (रूपनगर), चक 86, बाडा, संघोल आदि। |
| 6. | हरियाणा | – | राखीगढ़ी, बनवाली, मिताथल, दौलत पुर, रिसवल आदि। |
| 7. | जम्मू कश्मीर | – | माण्डा (चिनाव नदी) |
| 8. | पश्चिमी उ. प्र. | – | आलमगीरपुर, बड़ागाँव एवं हुलास (सहारनपुर) |
| 9. | गुजरात –(1) काठियावाड. | – | लोथल, रंगपुर रोजड़ी, प्रभासपाटन (सोमनाथ, भगतराव मेघ्घागम) |
| | (2) कच्छ की रन | – | धौलावीरा देशलपुर, सुरकोटदा |
| 10. | राजस्थान | – | कालीबंगा |

कालीबंगा, बनवाली एवं राखीगढ़ी प्राक हड़प्पन स्थल है। रंगपुर एवं रोजड़ी हडप्पोत्तर युगीन हैं।

**नगर नियोजन**

- हड़प्पा सभ्यता की सबसे प्रभावशाली विशेषता उसकी नगर योजना एवं जल निकास प्रणाली है। यह नगर योजना जाल पद्धति पर विन्यस्त है।
- प्राप्त नगरों के अवशेषों से पूर्व एवं पश्चिम दिशा में दो टीले हैं। पूर्व दिशा में स्थित टीले पर नगर या फिर आवास क्षेत्र के साक्ष्य मिलते हैं। पश्चिम के टीले पर गढ़ी अथवा दुर्ग के साक्ष्य मिलें है।
- लोथल एवं सुरकोटता के दुर्ग और नगर क्षेत्र दोनों एक ही रक्षा प्रचीर से घिरे है।

- हड़प्पा, मोहनजोदड़ो तथा कालीबंगा की नगर योजना एक समान थी किन्तु कालीबंगा में सुव्यवस्थित जल निकास प्रणाली न होने एवं कच्ची न होने एवं कच्ची ईंटों के मकान बने होने के कारण यह एक दीन हीन बस्ती प्रतीत होती है।
- हड़प्पा सभ्यता के किसी भी पुरास्थल से किसी भी मंदिर के अवशेष नहीं मिले हैं केवल मोहनजोदड़ों ही एक स्तूप का अवशेष मिला है। यद्यिपि इसे कुषाण कालीन माना गया है।
- हड़प्पा कालीन नगरों के चारों ओर प्राचीर बनाकर किलेबन्दी करने का उद्देश्य नगर की शत्रुओं के प्रबल आक्रमणों से रक्षा करना नहीं था। अपितु लुटेरों और पशु दस्युओं से सुरक्षित रहने के लिए सुरक्षात्मक उपाय थे।
- सड़कें– सड़कें गलियाँ एक निर्धारित योजना के अनुसार निर्मित की गई है मुख्य मार्ग उत्तर से दक्षिण दिशा की ओर जाते है। तथा सड़कें एक दूसरे का समकोण पर काटती हुई जाल सी प्रतीत होती थीं।
- कालीबंगा में निर्मित सड़कों एवं गलियों को एक समानुपातिक ढंग से बनाया गया था।
- कालीबंगा के अनेक घरों में अपने–अपने कुएँ थे।
- ईंटें–हड़प्पा, मोहनजोदड़ो और अन्य प्रमुख नगर पकाई गई ईंटो से पूर्णतः बने थे, जबकि कालीबंगा व रंगपुर नगर कच्ची ईंटों के बने थे।
- सभी प्रकार के ईंटों की ये विशेषता थी। वे एक निश्चित अनुपात में बने थे और अधिकांशतः आयताकार थे, जिनकी लम्बाई उनकी चौड़ाई की दूनी तथा ऊचाई या मोटाई की आधी थी। अर्थात् लम्बाई चोड़ाई तथा मोटाई का अनुपात 4:2:1 था।

**राजनीतिक व्यवस्था**

- हड़प्प संस्कृति की व्यापकता एवं निकास को देखने से ऐसा लगता है कि यह सभ्यता किसी केन्द्रीय शंक्ति से संचालित होती थी।
- हड़प्पाकालीन राजनीतिक व्यवस्था के वास्तविक स्वरूप के बारे में हमें कोई स्पष्ट जानकारी नहीं है। चूंकि हड़प्पावासी वाणिज्य की ओर अधिक आकर्षित थे इसलिए ऐसा माना जाता है कि सम्भवतः इड़प्पा सभ्यता का शासन वणिक वर्ग के हाथ में ही था।

- हवीलर ने सिन्धु प्रदेश के लोगों शासन को मध्यम वर्गीय जनतन्त्रात्मक शासन कहा और उसमें धर्म की महत्ता को स्वीकार किया।
- **स्टुअर्ट पिग्गट के विचार में**–''मोहनजोदड़ो का शासन एक प्रतिनिधि शासक के हाथ में था।''

**सामाजिक व्यवस्था**

- समाज की इकाई परम्परागत तौर पर परिवार थी। मातृदेवी की पूजा तथा मुहरों पर अंकित चित्र से यह परिलक्षित होता है हड़प्पा समाज सम्भवतः मातृसत्तात्मक था।
- नगर नियोजन दुर्ग, मकानों के आकार व रूपरेखा तथा शवों के दफनाने के ढंग को देखकर ऐसा प्रतीत होता है कि सैन्धव समाज अनेक वर्गों जैसे पुरोहित, व्यापारी, अधिकारी, शिल्पी, जुलाहे एवं श्रमिकों में विभाजित रहा होगा।
- सैन्धव सभ्यता के लोग युद्ध प्रिय कम शान्तिप्रिय अधिक थे।
- सिन्धु सभ्यता के निवासी शाकाहारी एवं मांसाहारी दोनों थे। भोज्य पदार्थों में गेहूँ, जौ, मटर, तिल, सरसों, खजूर, तरबूज, गाय, सुअर, बकरी का मांस, मछली, घड़ियाल, कछुआ आदि का मांस प्रमुख रूप से खायें जाते थे।

**धार्मिक जीवन**

- पुरास्थलों से प्राप्त मिट्टी की मूर्तियों, पत्थर की छोटी मूर्तियों, मुहरों, पत्थर निर्मित लिंग एवं योनियों, मृदभाण्डो पर चित्रित चिन्हों से यह परिलक्षित होता है कि धार्मिक विचार धारा मातृदेवी, पुरूषदेवता (पशुपतिनाथ), लिंग-योनि, वृक्ष प्रतीक, पशु जल आदि की पूजा की जाती थी।
- मोहन जोदड़ो से प्राप्त एक सील पर तीन मुख वाला एक पुरूष ध्यान की मुद्रा में बैठा हुआ है। उसके सिर पर तीन सींग है उसके बांयी ओर एक गैडा और भैसा तथा दायीं ओर एक हाथी एक व्याघ्र एवं हिरण है। इसे पशुपति शिव का रूप माना गया है। मार्शल ने इन्हें 'आद्यशिव' बताया।
- हड़प्पा में पकी मिट्टी की स्त्री–मूर्तिकाएं भारी संख्या में मिली है। एक मूर्तिका में स्त्री के गर्भ से निकलता एक पौधा दिखाया गया है। यह सम्भवतः पृथ्वी देवी की प्रतिमा है। हड़प्पा सभ्यता के लोग धरती की उर्वरता की देवी मानकार इसकी पूजा करते हैं।

- हड़प्पा सभ्यता से स्वास्तिक, चक्र और क्रास के भी साक्ष्य मिलते हैं। स्वास्तिक और चक्र सूर्य पूजा का प्रतीक था।
- धार्मिक दृष्टिकोण का आधार इहलौकिक तथा व्यावहारिक अधिक था। मूर्तिपूजा का आरम्भ सम्भवतः सैन्धव सभ्यता से होता है।

**आर्थिक जीवन**

- हड़प्पा कालीन अर्थव्यवस्था सिंचित कृषि अधिशेष पशुपालन, विभिन्न दस्तकारियों में दक्षता और समृद्ध आन्तरिक और व्यापार पर आधारित थी।
- कृषि–सिन्धु घाटी के लोग बाढ़ उतर जाने पर नवम्बर के महीने में बाढ़ वाले मैदानों में बीज बो देते थे और अप्रैल महीने में गेहूँ और जौ की फसल काट लेते थे।
- सैन्धव सभ्यता में कोई फावड़ा या फाल नहीं मिला है परन्तु कालीबंगा में हड़प्पा–पूर्व अवस्था में कूड़ो (हल रेखा) से ज्ञात होता है कि हड़प्पा काल में राजस्थान के खेतों में हल जोते जाते थे।
- हड़प्पाई लोग शायद लकड़ी के हलों का प्रयोग करते थे। फसल काटने के लिए पत्थर के हँसियों का प्रयोग होता था।
- नौ प्रकार के फसलों की पहचान की गई है–चावल (गुजरात एवं राजस्थान), गेहूँ (तीन किस्मे), जौ (दो किस्में) खजूर, तरबूत, मटर, राई, तिल आदि। किन्तु सैन्धव सभ्यता के मुख्या खाद्यान्न गेहूँ एवं जौ थे।
- मोहनजोदड़ा, हड़प्पा एवं कालीबंगा में अनाज बड़े-बड़े कोठारो में जमा किया जाता था।

**लिपि**

- सिन्धु लिपि में लगभग 64 मूल चिन्ह एवं 250 से 400 तक अक्षर हैं जो सेलखड़ी की आयताकार मुहरों, ताँबे की गुरिकाओं आदि पर मिलते हैं। लेखन प्रणाली साधारणतः अक्षर सूचक मानी गई है।
- हड़प्पा लिपि का सबसे पुराना नमूना 1853 में मिला था और उनकी लिखावट क्रमशः दायीं ओर से बायीं ओर की जाती थी।

- अधिकांश अभिलेख मृण्म्रद्राओं (सीलो) पर है इन सीलों का प्रयोग धनाढ्य लोग अपनी निजी सम्पति की चिन्हित करने और पहचानने के लिए करते होंगे।
- सैन्धव लिपि मूल रूप से देशी है और उसका पश्चिम एशिया की लिपियों से कोई सम्बन्ध नहीं हैं।
- बॉट–माट–तौल की इकाई सम्भवतः 16 के अनुपात में भी उदयहरण 16, 64, 160, 320, 640 आदि।
- ये बॉट घनाकार, बर्तुलाकार, बेलनाकार एवं शंक्वाकार आकृति के थे।
- मोहनजोदड़ो से सीप का बना हुआ तथा लोथन से हाथी दाँत का बना हुआ एक–एक पैमाना (स्केल) मिला है इसका प्रयोग सम्भवतः लम्बाई मापने में किया जाता रहा होगा।
- मृदभाण्ड–हड़प्पा भाण्डों परआम तौर से वृत्त या वृक्ष की आकृतियाँ मिलती हैं। (यही प्रमुख चित्रकारी थी) कुछ ठीकरो पर मनुष्य की आकृतियाँ भी दिखाई देती है।
- मुहरें–हड़प्पा संस्कृति की सर्वोत्तम कलाकृतियाँ है उसकी मुहरे। अब तक लगभग 2000 मुहरे प्राप्त हुई है। इनमें में अधिकांश मुहरे लगभग 500 मोहनजोदड़ो से मिली है।
- अधिकांश मुहरों लघु लेखों के साथ–साथ एक सिंगी सांड़ भैस, बाघ, बकरी, और हाथी की आकृतियाँ खोदी गई हैं।
- मुहरों के बनाने में सर्वाधिक उपयोग सेलखड़ी (Steatite) का किया गया है।
- लोथल और देसलपुर से तांबे की बनी मुहरें प्राप्त हुई है। सैन्धव मुहरें वेलनाकार, वर्गाकार, आयताकार एवं वृत्ताकर है।
- कुछ मुहरों पर देवी–देवताओं (जैसे पशुपति–शिव) की आकृतियों के चित्रित होने से यह अनुसान लगाया जा सकता है कि सम्भवताः इनका धार्मिक महत्व भी रहा होगा।
- वर्गाकार मुद्राएं सर्वाधिक प्रचलित थी।
- मोहनजोदड़ो, लोथल तथा कालीबंगा से राजमुद्रांक (Sealings) भी मिले हैं इससे व्यापारिक क्रियाकलापों का ज्ञान होता है।

- लघु मृण्मूर्तियाँ–सिन्ध प्रदेश में भारी संख्या में आग में पकी मिट्टी (जो टेराकोटा कहलाती है) की बनी मूर्तिकाएं (फिगरिन) मिली है। इनका प्रयोग या तो खिलौने के रूप में या पूज्य प्रतिमाओं के रूप में होता था। इनमें कुत्ते, भेड़, गाय, बैल और बन्दर की प्रतिकृतियाँ मिलती हैं।
- यद्यपि नर और नारी दोनों की मृण्मूर्तियाँ मिली हैं तथापि नारी मृण्मूर्तियाँ संख्या में अधिक हैं।
- प्रस्तर शिल्प में हड़प्पा संस्कृति पिछड़ी हुई थी।

**व्यापार**

- सिन्धु सभ्यता के लोगों के जीवन में व्यापार का बड़ा महत्व था। इसकी पुष्टि हड़प्पा, मोहनजोदड़ो तथा लोथल में अनाज के बड़े–बड़े कोठारो तथा ढेर सारी सीलों (मृण्मुद्राओं) एक रूप लिपि और मानकीकृत माप–तौलों के अस्तित्व से होती है।
- हड़प्पाई लोग व्यापार मे धातु के सिक्कों का प्रयोग नहीं करते थे, सारे आदान–प्रदान वस्तु विनिमय द्वारा करते थे।
- स्थलीय व्यापार में अफगानिस्तान तथा ईरान तथा जलीय व्यापार मे मकरान के नगरों की भूमिका महत्वपूर्ण होती थी। बहरीन द्वीप के व्यापारी दोनों देशों के बीच बिचौलियों का काम किया करते थे।
- मोहनजोदड़ों की एक मुहर पर एक ठीकरे के ऊपर सुरेरियन ढंग की नावों के चित्र अंकित है।

**उद्भव, उत्थाव एवं अवसान**

- हड़प्पा संस्कृति का अस्तित्व मोटे तौर पर 2500 ई० पू० से 1800 ई० पू० के बीच रहा। सारी जीवन पद्धति में एक रूपता बनी रही।

**लौह काल**

- उत्तर भारत में ताम्र काल के बाद लौह काल प्रारम्भ हुआ तथा मगध का उत्कर्ष इसका प्रमाण है।
- दक्षिण भारत में पाषाण काल के पश्चात लौह काल आया, दक्षिण भारत में स्वतन्त्र रूप से लोहे को खोजा गया और उसका बहुत बाद में प्रयोग किया गया।
- छठी शताब्दी ई. पू. में पूर्वी उत्तर प्रदेश व पश्चिमी बिहार में लोहे अधिकाधिक प्रयोग होने लगा, इससे अतिरिक्त उपज व अन्य आर्थिक परिवर्तन हुए, विविध शिल्पों का उदय हुआ क्षेत्रीय भावना जाग्रत हुई।



VPM CLASSES

VPM CLASSES